1960C Todays need to teach Jain Dharm

In Jain Mitra April 1960

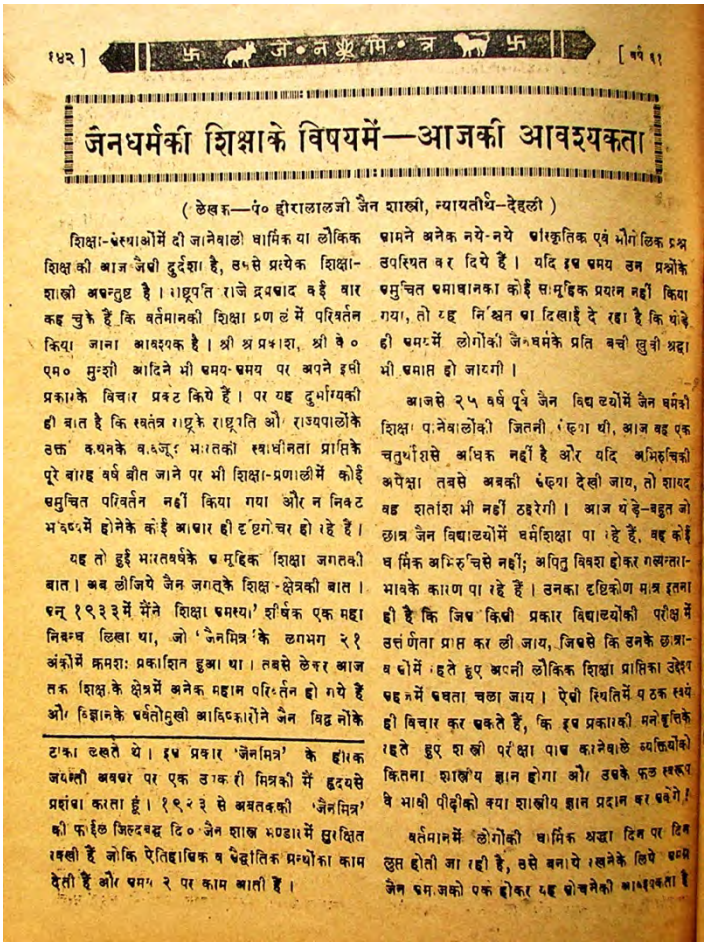

जैनधर्मकी शिक्षाके विषयमें—आजकी आवश्यकता

(लेखक—पं० हीरालालजी जैन शास्त्री, न्यायतीर्थ–देहली)

शिक्षा-संस्थाओंमें दी जानेवाली धार्मिक या लौकिक शिक्षाकी आज जैसी दुर्दशा है, उससे प्रत्येक शिक्षा-शास्त्री असन्तुष्ट है। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद कई बार कह चुके हैं कि वर्तमानकी शिक्षा प्रणालीमें परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। श्री श्रीप्रकाश, श्री के० एम० मुन्शी आदिने भी समय-समय पर अपने इसी प्रकारके विचार प्रकट किये हैं। पर यह दुर्भाग्यकी ही बात है कि स्वतंत्र राष्ट्रके राष्ट्रपति और राज्यपालोंके उक्त कथनके बावजूद भारतको स्वाधीनता प्राप्तिके पूरे बारह वर्ष बीत जाने पर भी शिक्षा-प्रणालीमें कोई समुचित परिवर्तन नहीं किया गया और न निकट भविष्यमें होनेके कोई आसार ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

यह तो हुई भारतवर्षके सामूहिक शिक्षा जगतकी बात। अब लीजिये जैन जगत्के शिक्षा-क्षेत्रकी बात। सन् १९३३में मैंने 'शिक्षा समस्या' शीर्षक एक महा निबन्ध लिखा था, जो 'जैनमित्र'के लगभग २१ अंकोंमें क्रमशः प्रकाशित हुआ था। तबसे लेकर आज तक शिक्षाके क्षेत्रमें अनेक महान परिवर्तन हो गये हैं और विज्ञानके सर्वतोमुखी आविष्कारोंने जैन विद्वानोंके सामने अनेक नये-नये सांस्कृतिक एवं भौगोलिक प्रश्न उपस्थित कर दिये हैं। यदि इस समय उन प्रश्नोंके समुचित समाधानका कोई सामूहिक प्रयत्न नहीं किया गया, तो यह निश्चित सा दिखाई दे रहा है कि थोड़े ही समयमें लोगोंकी जैनधर्मके प्रति बची खुची श्रद्धा भी समाप्त हो जायगी।

आजसे २५ वर्ष पूर्व जैन विद्यालयोंमें जैन धर्मकी शिक्षा पानेवालोंकी जितनी संख्या थी, आज वह एक चतुर्थांशसे अधिक नहीं है और यदि अभिरुचिकी अपेक्षा तबसे अबकी संख्या देखी जाय, तो शायद वह शतांश भी नहीं ठहरेगी। आज थोड़े-बहुत जो छात्र जैन विद्यालयोंमें धर्मशिक्षा पा रहे हैं, वह कोई धार्मिक अभिरुचिसे नहीं; अपितु विवश होकर गत्यन्तराभावके कारण पा रहे हैं। उनका दृष्टिकोण मात्र इतना ही है कि जिस किसी प्रकार विद्यालयोंकी परीक्षामें उत्तीर्णता प्राप्त कर ली जाय, जिससे कि उनके छात्रावासोंमें रहते हुए अपनी लौकिक शिक्षा प्राप्तिका उद्देश्य सहजमें सधता चला जाय। ऐसी स्थितिमें पाठक स्वयं ही विचार कर सकते हैं, कि इस प्रकारकी मनोवृत्तिके रहते हुए शास्त्री परीक्षा पास करनेवाले व्यक्तियोंको कितना शास्त्रीय ज्ञान होगा और उसके फलस्वरूप वे भावी पीढ़ीको क्या शास्त्रीय ज्ञान प्रदान कर सकेंगे!

वर्तमानमें लोगोंकी धार्मिक श्रद्धा दिन पर दिन लुप्त होती जा रही है, उसे बनाये रखनेके लिये समग्र जैन समाजको एक होकर यह सोचनेकी आवश्यकता है

टीका लिखते थे। इस प्रकार 'जैनमित्र' के हीरक जयन्ती अवसर पर एक उपकारी मित्रकी मैं हृदयसे प्रशंसा करता हूं। १९२३ से अबतककी 'जैनमित्र' की फाईल जिल्दबद्ध दि० जैन शास्त्र भण्डारमें सुरक्षित रक्खी हैं जोकि ऐतिहासिक व सैद्धांतिक ग्रन्थोंका काम देती हैं और समय २ पर काम आती हैं।

कि आजके युगकी मांगोंको कैसे पूरा किया जाय? प्रतिदिन जो नये-नये प्रश्न सामने आ रहे हैं, उनका क्या समाधान किया जाय और कैसे धार्मिक श्रद्धाका स्थिरीकरण किया जाय। जैन समाजके सामने आज जो प्रश्न विचारनेके लिए उपस्थित हैं, वे इस प्रकार हैं—

(१) जैनधर्मका वैज्ञानिक रूप क्या है?

(२) जैनतत्त्वोंका क्या विश्लेषण संभव है? यदि है तो कैसे?

(३) जैन शास्त्रोंमें बतलाई गई भूगोल और खगोल सम्बन्धी बातें क्या सत्य हैं? यदि है तो कैसे?

(४) क्या जैनधर्म विश्व धर्म होनेके योग्य है? यदि है तो कैसे?

(५) आजके युगमें जैनधर्मका प्रचार कैसे किया जाय?

उपर्युक्त प्रश्नोंके समाधान करनेके लिए आवश्यक है कि दि० श्वे० दोनों समाजोंके विद्वान लोग एक ग्रन्थोंका अध्ययन करें, पठन-पाठनके क्रमका नये सिरेसे संशोधन करें, पंचवर्षीय योजना एवं इन ये धर्मा-त्माओंका द्रव्य एकत्र संचयकर धर्मके प्रचारमें और आजकी वैज्ञानिक प्रणालीसे नवीन पीढ़ीको शिक्षित दीक्षित कर उनके द्वारा उपर्युक्त प्रश्नोंका समुचित समाधान मांगें और उसे संसारके सामने रखें।

शिक्षा संस्थाओंके सुधारके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें तीन वर्गोंमें विभाजित कर दिया जाय—

(१) पाठशाला—जिसमें प्रवेशिका और मैट्रिक तककी पढ़ाईका समुचित प्रबन्ध हो।

(२) विद्यालय—जिसमें विशारद और मध्यमाके साथ इण्टर मीजिएट तककी शिक्षाकी व्यवस्था हो।

(३) महाविद्यालय—जिसमें शास्त्री और आचार्य तककी पढ़ाईकी व्यवस्था हो, तथा जिसमें रहते हुए छात्र M. A. और M. Sc. की परीक्षा बिना किसी बाधाके दे सकें।

आजकी मांगके अनुरूप विद्वानोंको तैयार करनेके लिए यह आवश्यक है कि समाज कुछ विशेष छात्र-वृत्तियां देवे। उसके पात्रोंका निर्णय निम्न प्रकारसे किया जावे—

(१) प्रवेशिका और मैट्रिकमें एक साथ ७५ प्रतिशतसे ऊपर अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होनेवाले ५ छात्रोंको ३५) रु० मासिक भोजनके अतिरिक्त।

(२) शास्त्री और बी० ए० प्रथम श्रेणिसे उत्तीर्ण करने पर ५०) मासिक।

आचार्य और एम० ए० या एम० एस० सी० प्रथम श्रेणीसे उत्तीर्ण करने पर उन छात्रोंको ३ वर्षके लिए २००) मासिककी रिसर्च स्कालरशिप दी जावे, तथा उनको देश और विदेशमें शोध-खोज करनेके लिए अनुसन्धान एवं प्रयोगशालाओंमें भेजा जावे।

जब वे लोग अपनी रिसर्च पूरी कर लें, तब समाजका कर्तव्य है कि वह जैन शिक्षा संस्थाओंमें उच्च पदपर एवं उच्च वेतनपर उन्हें शिक्षक एवं प्रचारकके रूपमें नियुक्त करे।

इसके लिए एक दसवर्षीय योजना बनाकर समस्त जैन समाजकी शिक्षा संस्थाओंके प्रमुख विद्यार्थियोंको प्रवेशिका और मेट्रिककी कम्पटीशन परीक्षाके लिए आमंत्रित किया जावे और उनमेंसे प्रथम श्रेणीसे उत्तीर्ण होनेवाले ५ छात्रोंको ऊपर बतलाई गई विशेष छात्र-वृत्ति देकर आगेकी पढ़ाईके लिए प्रोत्साहित किया जावे। अगले वर्षोंमें आगे-आगेकी पढ़ाईकी इसी

प्रकार कम्पटीशन परीक्षा ली जाय और उन्हें उक्त प्रकारसे उत्तीर्ण होनेवाले ५ छात्रोंको उक्तम वसे छात्रवृत्ति दी जाय। इस प्रकार ५ वर्षके भीतर हम कमसे कम ५ ऐसे योग्य स्नातक तैयार कर लेंगे जो जैन तत्त्व-ज्ञानके साथ साथ आधुनिक विज्ञानके भी वेत्ता होंगे।

पाठकोंको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उक्त कार्यके श्री गणेश करनेके लिये एक छात्रका वार्षिक व्यय भार उठानेकी स्वीकृति हमें दिल्ली निवासी एक धार्मिक सज्जनसे मिली है, जो स्वयं एक रिटायर्ड सरकारी अफसर हैं और चाहते हैं कि जैन धर्मका किसी प्रकार संसारमें प्रचार हो।

आशा है 'मित्र'के पाठकोंमेंसे ऐसे और भी अनेक सच्चे जैन समाजके मित्र निकलेंगे जो उक्त योजनाकी पुष्टि करते हुए उसे कार्यान्वित करनेके लिये १-१ छात्रवृत्तिकी स्वीकारता देंगे।

श्रीमान् साहू शांतिप्रसादजी और उनके छात्रवृत्ति फण्डसे समाजको बहुत बड़ी आशा है। मैं आशा करूँगा कि समाजके प्रमुख विचारक श्रीमान् और विद्वान् लोग इस दिशामें अपने विचार प्रकट कर समाजको आगे बढ़ानेमें सहायक होंगे।